राजऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर (राज.)

संस्कृत पाठ्यक्रम (2020–21)

स्नातक कला (प्रथम वर्ष)

सामान्य निर्देश:–

1. बी.ए. प्रथम वर्ष संस्कृत विषय की परीक्षाओं में दो प्रश्न पत्र होंगे।
2. प्रत्येक प्रश्न पत्र में न्यूनतम उत्तीर्णांक 36 तथा पूर्णांक 100 होंगे और समय 3 घण्टे का होगा।
3. प्रश्न पत्र केवल हिन्दी माध्यम में बनाया जायेगा, परीक्षार्थी को छूट होगी कि वह हिन्दी, संस्कृत अथवा अंग्रेजी में से किसी एक भाषा में उत्तर दे सके। यदि परीक्षक ने किसी प्रश्न विशेष के लिए भाषा का निर्देश कर दिया है तो उस प्रश्न का उत्तर उसी भाषा में देना अनिवार्य होगा।
4. संस्कृत भाषा केवल देवनागरी लिपि में ही लिखी जानी अपेक्षित है।
5. निर्धारित ग्रन्थों में से अनुवाद, व्याख्या, सरलार्थ एवं समालोचनात्मक प्रश्न पूछे जावेंगे।
6. प्रत्येक प्रश्न पत्र में 10 प्रतिशत अंक संस्कृत भाषा में उत्तर के लिये निर्धारित हैं।
7. प्रत्येक प्रश्न पत्र में दो भाग होंगे, जिसमें प्रथम 'अ' भाग लघूत्तरात्मक प्रश्नों का होगा। 'ब' भाग में निबन्धात्मक प्रश्न होंगे। प्रश्न पत्र में भाग 'अ' 30 अंक का तथा भाग 'ब' 70 अंक का होगा। प्रश्न पत्र का कुल पूर्णांक 100 होगा

परीक्षा योजना :–	न्यूनतम उत्तीर्णांक – 72	पूर्णांक – 200
प्रथम प्रश्न–पत्र		अंक – 100
द्वितीय प्रश्न–पत्र		अंक – 100

प्रथम प्रश्न–पत्र

दृश्य एवं श्रव्य काव्य

1. स्वप्नवासवदत्तम् (भास) 25 अंक
2. नीतिशतकम्(भर्तृहरि) 30 अंक
3. रघुवंशम्–प्रथम सर्ग (कालिदास) 25 अंक
4. अनुवाद–संस्कृत से हिन्दी–अपठित गद्यांश/पद्यांश 10 अंक
5. अनुवाद–हिन्दी से संस्कृत 10 अंक

क्र. स.	पुस्तक का नाम	लघूत्तरात्मक प्रश्न		कुल अंक	व्याख्या एवं निबन्धात्मक प्रश्न		कुल अंक	कुल योग
		प्रश्न सं.	अंक		प्रश्न सं.	अंक		
1	स्वप्नवासवदत्तम्	4	2	8	1. 2 श्लोकों व्या. 2. विवेचनात्मक प्र. 1	5+5 07	10 07	8+10+7-25
2	नीतिशतकम्	5	2	10	1. 2 श्लोकों व्या. 2. विवेचनात्मक प्र. 1	6+6 08	12 08	10+12+8=30
3	रघुवंशम्	4	2	8	1. 2 श्लोकों व्या. 2. विवेचनात्मक प्र. 1	5+5 07	10 07	8+10+7=25
4	अनुवाद गद्य संस्कृत से हिन्दी अपठित वाक्य हिंदी से संस्कृत	1 1	2 2	2 2	1. अपठित संस्कृत गद्य का हिन्दी अनुवाद 2. चार हिंदी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद	08 4x2	08 08	10 10

प्रश्न पत्र निर्माण–निर्देशः–

1. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
2. प्रत्येक पुस्तक से लघूरात्तत्मक, निबन्धात्मक एवं व्याख्यात्मक प्रश्न होंगे।
3. लघूत्तरात्मक प्रत्येक प्रश्न के लिए 02 अंक निर्धारित हैं।

निबन्धात्मक/व्याख्यात्मक प्रश्न

1. **स्वप्नवासवदत्तम्**

(क) 04 लघूत्तरात्मक प्रश्न 2–2 अंक = 8 अंक
चार श्लोक पूछकर किन्हीं दो श्लोकों की सप्रसंग व्याख्या अपेक्षित है। प्रत्येक

(ख) व्याख्या हेतु 05 अंक निर्धारित हैं। 05x02 =10 अंक

(ग) 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से एक का उत्तर देय है। 07x01=07 अंक

2. नीतिशतकम्

(क) 05 लघूत्तरात्मक प्रश्न 2–2 अंक = 10 अंक

(ख) 04 श्लोक पूछकर दो श्लोकों की सप्रसंग व्याख्या पूछी जायेगी। 2 x 6 = 12 अंक

(ग) 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से एक प्रश्न करना होगा। 1 x 8 = 8 अंक

3. रघुवंशम्

(क) 04 लघूत्तरात्मक प्रश्न 2–2 अंक = 8 अंक

(ख) 04 श्लोक पूछकर दो श्लोकों की सप्रसंग व्याख्या करनी होगी। 2 x 5 = 10 अंक

(ग) 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से एक का उत्तर देय है। 07x01=07 अंक

4. अनुवाद

(क) 01 लघूत्तरात्मक प्रश्न 02 अंक (गद्यांश) 2 अंक
संस्कृत के 02 अपठित गद्यांशों में से 01 का हिंदी अनुवाद 8 अंक

(ख) 01 लघूत्तरात्मक प्रश्न (संस्कृत अनुवाद) 2 अंक
08 में से चार हिंदी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद 4X2= 8

सहायक पुस्तक।

1. स्वप्नवासवदत्तम् – डॉ. कृष्णदेव प्रसाद–जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
2. स्वप्नवासवदत्तम् – डॉ. रूपनाराण त्रिपाठी – रचना प्रकाशन, जयपुर।
   स्वप्नवासवदत्तम् – संस्कृत हिन्दी व्याख्या – डॉ. जगन्नाथ पाण्डेय, जगदीश संस्कृत पुस्ताकलय, जयपुर।
3. स्वप्नवासवदत्तम् – डॉ. सुभाष वेदालंकार, – अलंकार प्रकाशन, जयपुर।
4. स्वप्नवासवदत्तम् – डॉ. श्रीकृष्ण ओझा, अभिषेक प्रकाशन, चौड़ा रास्ता जयपुर।
5. नीतिशतकम् – डॉ. गोपाल शर्मा, हंसा प्रकाशन, जयपुर।
6. नीतिशतकम् – डॉ. श्रीकृष्ण ओझा, राज प्रकाशन मंदिर, जयपुर।
7. नीतिशतकम् – डॉ. सुभाष वेदालंकार, हंसा प्रकाशन, जयपुर।
8. रघुवंशम् (प्रथम सर्ग)
9. संस्कृत व्याकरण – श्री निवास शास्त्री।
10. वृहद अनुवाद चन्द्रिका – चक्रधर हंस नौटियाल।
11. रचना अनुवाद कौमुदी – बाबूलाल शुक्ल शास्त्री।

12. संस्कृत रचनानुवाद मंजरी – पं. नंदकुमार शास्त्री, अजमेरा बुक कम्पनी, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर।

13. रचनानुवाद कौमुदी – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, वाराणसी।

14. रचनानुवादप्रभा– डॉ. श्रीनिवास शास्त्री, कुरुक्षेत्र।

द्वितीय प्रश्न–पत्र

भारतीय संस्कृति के तत्त्व, पद्य–साहित्य एवं व्याकरण

1. **भारतीय संस्कृति के तत्त्व** 20 अंक

(क) भारतीय संस्कृति–विषय, पृष्ठभूमि, विशेषताएँ

(ख) भारतीय संस्कृति की रूपरेखा–पूर्व वैदिककाल, वैदिकोत्तर काल, मध्यकाल एवं आधुनिक काल।

(ग) वर्ण, आश्रम एवं संस्कार।

(घ) पंच महायज्ञ, ऋणत्रय।

(ङ) शिक्षा (वैदिक काल से 7वीं शताब्दी तक)।

(च) भारतीय दर्शन की प्रमुख विचारधाराएँ।

(छ) भारतीय संस्कृति का मानव–कल्याण में योगदान।

2. **किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग) –भारवि** 25 अंक

3. **व्याकरण – लघुसिद्धान्तकौमुदी – संज्ञा एवं संधि प्रकरण** 35 अंक

(क) संज्ञा प्रकरण – 10 अंक

(ख) अच् संधि प्रकरण – 10 अंक

(ग) हल् संधि प्रकरण – 10 अंक

(घ) विसर्ग संधि प्रकरण – 05 अंक

4. **शब्द–रूप एवं धातु–रूप** 20 अंक

(क) शब्द–रूप

राम, हरि, गुरु, पितृ, रमा, मति, नदी, ज्ञान, वारि, इदम्, अदस्। 10 अंक

(ख) धातु–रूप

भू एवं एध् धातु के रूप दशों लकारों में 10 अंक

क्र. सं.	पुस्तक का नाम	लघूत्तरात्मक प्रश्न		कुल अंक	व्याख्या एवं निबन्धात्मक प्रश्न		कुल अंक	कुल योग
		प्रश्न सं.	अंक		प्रश्न सं.	अंक		
1	भारतीय संस्कृति के तत्त्व	03	02	06	1. एक विवेचनात्मक प्र. 2. एक टिप्पणी .	10 04	10 04	06+10+04=20
2	किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग)	03	02	06	1. दो श्लोकों की व्या. (01 संस्कृत में) 2. एक विवेचनात्मक प्र.	4+10 05	14 05	06+14+05=25
3	व्याकरण – लघुसिद्धान्तकौमुदी संज्ञा प्रकरण अच् संधि हल संधि विसर्ग संधि	 02 01 01 01	 02 02 02 02	 04 02 02 02	 1. दो सूत्रों की व्या. 2. दो पदों की सिद्धि 3. दो पदों की सिद्धि 4. एक सूत्र की व्याख्या	 3+3 4+4 4+4 3	 06 08 08 03	 04+06=10 02+08=10 02+08=10 02+03=05
4	शब्द–रूप एवं धातु–रूप	02 02	02 02	04 04	1. दो शब्दों के रूप 2. दो धातुओं के रूप	3+3 3+3	06 06	04+06=10 04+06=10

प्रश्न पत्र निर्माण–निर्देशः–

1. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
2. प्रत्येक पुस्तक से लघूरात्तत्मक, निबन्धात्मक एवं व्याख्यात्मक प्रश्न होंगे।
3. लघूत्तरात्मक प्रत्येक प्रश्न के लिए 02 अंक निर्धारित हैं।

निबन्धात्मक / व्याख्यात्मक प्रश्न

भारतीय संस्कृति के तत्त्व

1. दो निबन्धात्मक प्रश्न पूछकर किसी एक का उत्तर अभीष्ट है। 10 अंक
2. दो विषयों पर टिप्पणी पूछकर किसी एक का उत्तर अभीष्ट है। 04 अंक

किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग)

1. 03 लघूत्तरात्मक प्रश्न 2–2 अंक = **6 अंक**
   04 श्लोकों में 02 की व्याख्या जिनमें से एक व्याख्या संस्कृत माध्यम में अनिवार्य (संस्कृत व्याख्या 10 अंक) **4+10 अंक**
   02 विवेचनात्मक प्रश्नों में एक का उत्तर अपेक्षित है **5 अंक**
2. 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से एक प्रश्न करना होगा। **05x01=05 अंक**

व्याकरण – लघुसिद्धान्तकौमुदी – संज्ञा एवं संधि प्रकरण

(क) संज्ञा प्रकरण :–

- 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न 2–2 अंक **2 x 2 = 4 अंक**
- चार सूत्रों में से दो सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या अपेक्षित है। **02x03=06 अंक**

(ख) अच् संधि प्रकरण:–

- 01 लघूत्तरात्मक प्रश्न 2 अंक **02 अंक**
- चार में से दो शब्दों की सूत्र निर्देशपूर्वक सिद्धि **4 + 4 = 8 अंक**

(ग) हल् संधि प्रकरण:–

- 01 लघूत्तरात्मक प्रश्न 2 अंक **02 अंक**
- चार में से दो शब्दों की सूत्र निर्देशपूर्वक व्याख्या **4 + 4 = 8 अंक**

(घ) विसर्ग संधि प्रकरण:–

- 01 लघूत्तरात्मक प्रश्न 2 अंक **02 अंक**
- 02 में से एक सूत्र की सोदाहरण व्याख्या **03 अंक**

शब्द–रूप एवं धातु–रूप

(क) शब्द–रूप :–

- निर्धारित पदों में से दो–दो अंक के दो लघूत्तरात्मक प्रश्न। **02x02=04 अंक**
- चार शब्दों में से दो के शब्द रूप **02x03=06 अंक**

(ख) धातु–रूप

- निर्धारित पदों में से दो–दो अंक के दो लघूत्तरात्मक प्रश्न। **02x02=04 अंक**
- चार शब्दों में से दो के शब्द रूप **02x03=06 अंक**

सहायक पुस्तकें

1. भारतीय सांस्कृतिक निधि– डॉ. रामजी उपाध्याय, महामनापुरी, वाराणसी।
2. भारतीय संस्कृति – श्री रामदेव साहू, श्याम प्रकाशन चौडा रास्ता, जयपुर।
3. भारतीय संस्कृति – वाई. एस. रमेश – रचना प्रकाशन, जयपुर।
4. भारतीय संस्कृति – डॉ. रामजी उपाध्याय, महामनापुरी, वाराणसी।
5. भारतीय दर्शन – डॉ. बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।

किरातार्जुनीयम्

1. किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग) – आचार्य नवल किशोर कांकर, विद्या भवन, जयपुर।
2. किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग) – डॉ. विश्वनाथ शर्मा, आदर्श प्रकाशन, जयपुर।
3. किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग) – डॉ. सुभाष वेदालंकार, – अलंकार प्रकाशन, जयपुर।

व्याकरण

1. लघुसिद्धांत कौमुदी – डॉ. बंसत जैतली एवं डॉ. राजेश कुमार, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
2. लघुसिद्धांत कौमुदी – श्री महेश सिंह कुशवाहा, चौखम्भा, संस्कृत प्रतिष्ठाान, दिल्ली।
3. लघुसिद्धांत कौमुदी – श्री धरानन्द शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
4. लघुसिद्धांत कौमुदी – पं. भीमसेन शास्त्री।
5. संस्कृत व्याकरण – श्री निवास शास्त्री।